उस्ताद भूरेलाल

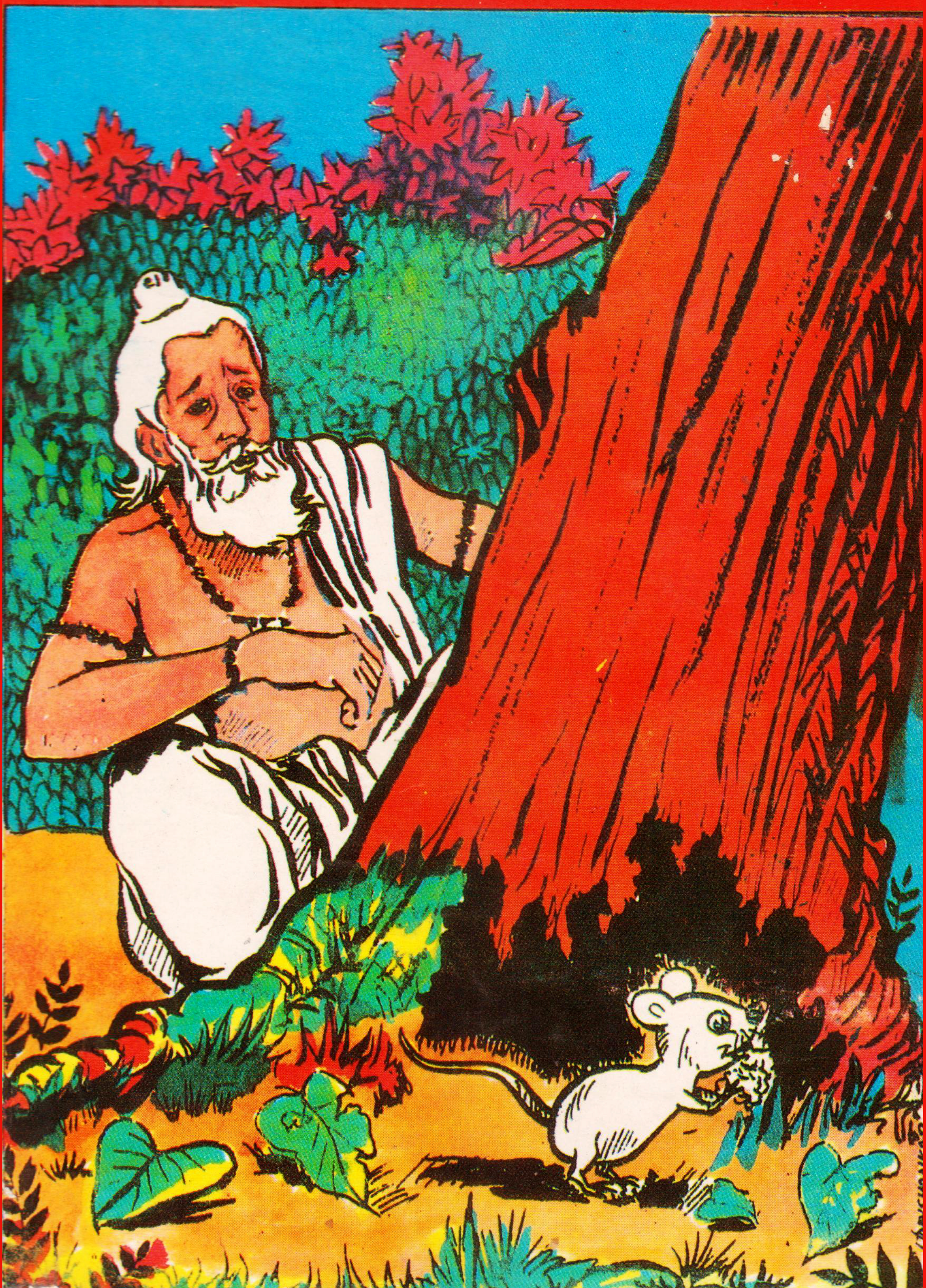

बाल उपन्यास

उस्ताद भूरेलाल

बल्लभ डोभाल

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय,
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : चैत्र 1918 (मार्च 1996)
द्वितीय संस्करण : शक् 1923 (2001)

© प्रकाशन विभाग

ISBN : 81-230-0288-2

मूल्य : 26.00 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001, द्वारा प्रकाशित

विक्रय केंद्र ● प्रकाशन विभाग

- ☐ पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001
- ☐ सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- ☐ हाल नं. 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
- ☐ कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई-400038
- ☐ 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कोलकाता-700069
- ☐ राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई-600090
- ☐ बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- ☐ प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम-695001
- ☐ 27/6, राममोहन राय मार्ग, लखनऊ-226001
- ☐ राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004
- ☐ 'एफ' विंग, प्रथम तल, केंद्रीय सदन, कोरामंगला, बंगलौर-560034
- ☐ अंबिका काम्पलेक्स, प्रथम तल, पालदी, अहमदाबाद-380007
- ☐ नौजान रोड, उजान बाजार, गुवाहाटी-781001

विक्रय काउंटर ● पत्र सूचना कार्यालय

- ☐ 80 मालवीय नगर, भोपाल-462003
- ☐ [illegible] काम्प्लेक्स, 'ए' विंग, ए.बी. रोड, इंदौर, (म.प्र.)
- ☐ [illegible] भवानी सिंह मार्ग, जयपुर-302001 (राजस्थान)

मुद्रक : **बंगाल प्रिंटिंग प्रेस**, नई दिल्ली - 3670002, 3618317

कहानी बहुत दिन पहले की है। उनके आपसी झगड़े की कहानी ....। एक लंबे समय से उनका आपस में झगड़ा चला आ रहा था और वे हमेशा एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश में रहने लगे थे।

जिस जगह के लिए उनके बीच संघर्ष चल रहा था, वहां कोई बस्ती नहीं थी, न ही बाजार था। वह जगह अकेली और वीरान थी। बड़ी-बड़ी चट्टानें और घना जंगल ही चारों तरफ नजर आता था। इन्हीं के बीच से होकर गंगा बहती थी। वहीं गंगा के एक किनारे पर संन्यासी बाबा ने कुटिया बना ली थी और भूरेलाल को इस बात से चिढ़ थी कि बाबा ने कुटिया क्यों बना ली है।

बाबा सुबह-शाम गंगा स्नान करते और देर तक अपने भजन-कीर्तन में बैठे रहते थे।

झगड़े की शुरुआत यहीं से होती है कि बाबा सुबह-शाम देर तक आंखें बंद किए बैठे रहते थे। भूरेलाल को यह बात पसंद नहीं थी। आंखे बंद करके बैठने का क्या मतलब है ? वह सोचता कि आंखे मूंद कर बाबा उसी को पकड़ने की योजना बना रहे हैं। वह बाबा की तरफ देर तक टकटकी लगाए देखता रहता और जैसे ही बाबा की आंखें खुलती, भूरेलाल तुरंत गायब हो जाता।

बाबा समझ न पाते थे कि वह कौन-सी चीज है, जो इतनी फुर्ती से गायब हो जाती है। कई बार उन्हें लगता कि शायद उनकी आंखें धोखा खा रही हैं। लेकिन इस बात को वे हमेशा महसूस करते रहते थे कि भजन के समय कोई यहां उपस्थित जरूर रहता है और आंखें खुलते ही गायब हो जाता है। कभी आस-पास पड़ी चीजों से छेड़खानी होने की आवाज कानों में पड़ जाती, तब भूरेलाल और अधिक सतर्क हो जाता। कहीं बाबा उसे देख न लें, इसलिए आवाज के साथ ही वह भी किसी कोने में जाकर दुबक जाता। कई बार आंखों में धूल झोंकता हुआ वह इतनी फुर्ती से निकल जाता कि बाबा चकित रह जाते। कई दिनों तक वे चाहते हुए भी भूरेलाल को देख नहीं सके।

भूरेलाल शरारती तो था ही .... बाबा को वहां पाकर उसे कई तरह की शरारतें सूझने लगीं। उसे लगता कि उसे बेवकूफ बनाने के लिए ही बाबा आंखे बंद किए रहते हैं। उसने सोचा कि उन्हें डराने का यही मौका है और भूरेलाल ने एक दिन अचानक बाबा के कंधे पर कूद लगा दी।

ध्यान में बैठे बाबा कुछ समझ न सके कि यकायक उनके कंधे पर क्या आ गिरा है। आंखें बंद किए ही उन्होंने अपना कंधा उचकाया, लेकिन भूरेलाल को कोई असर नहीं हुआ। वह बैठा रहा। जैसे पत्थर पर जमकर बैठा हो। अपने कंधे पर उसके पंजों की पकड़ बाबा को ऐसी लग रही थी, जैसे किसी ने सुइयां गाढ़ दी हों।

UDAYSHANKAR

उनका ध्यान भंग हो गया। बाबा ने कंधे को झटका दिया, तो भूरेलाल सामने कूद आया और मूछों को हिलाता हुआ उनकी तरफ देखने लगा।

उस दिन बाबा ने पहली बार भूरे को देखा। देख कर हंसी छूट गई। बड़ा साहसी है, डरता भी नहीं' — बाबा मन ही मन उसकी प्रशंसा करने लगे। इस चुटकी भर प्राणी में कितना साहस है।

भूरेलाल चुटकी भर तो नहीं था। कम-से-कम आधा किलो से भी अधिक उसका वजन रहा होगा। लंबी सूई की तरह बारीक पैनी मूंछें . . . गोल, पानीदार आंखें, मुलायम झिल्ली की तरह दोनों कानों को हिलाता हुआ, भूरेलाल बाबा की आंखों में आंखें डाले बैठा रहा। जैसे कोई दांव लगाए बैठा हो।

बाबा भी उसे देखते रहे। उसका रंग-रूप भी कैसा आकर्षक था। भूरे रंग के चमकदार बालों ने उसकी देह को ऐसा चिकना बना दिया था कि नजरें टिकती न थी। चिकने बालों के कारण वह अधिक स्वस्थ और फुर्तीला लग रहा था। उसकी हरकतों से मालूम होता था कि उसमें जरूरत से ज्यादा फुर्ती और चौंका देने वाले गुण विद्यमान थे। वह चाहे तो पलक झपकते ही कहां से कहां पहुंच जाए। पल में प्रकट होने और देखते-देखते गायब हो जाने की अपनी कला के कारण वह अंत तक बाबा की आंखों में धूल झोंकता रहा। उसके भूरे रंग पर मोहित होकर बाबा ने उसे भूरेलाल नाम दे दिया।

उस दिन देर तक भूरेलाल बाबा के आगे बैठा रहा। बाबा भी आश्चर्य से उसे देखते रहे। वह कभी मूंछें हिलाकर जमीन को सूंघता और फिर बाबा की तरफ टकटकी बांधे देखता रहता। कुछ देर बाद भूरेलाल ने शरीर का पिछला हिस्सा जमीन पर टिका दिया और अगले पंजों को हवा में उछाल कर आसमान को सूंघने की हरकत करने लगा। शायद एक बार बाबा का समूचा रूप देख लेने की कोशिश में उसे ऐसा करना पड़ा था।

बाबा को उसकी वह हरकत पसंद न आई। बोले, "अबे देखता क्या है, अभी कंधे पर चढ़ा था, अब क्या खोपड़ी पर सवार होगा ? चला जा . . . . मुझे भजन करने दे।"

भूरेलाल ने सुना, पर बात अनसुनी कर दी। वह हवा में पंजे उछालता हुआ, आसमान को फिर सूंघने लगा।

"नहीं जाएगा ?"— कहते हुए बाबा ने चिमटे की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि भूरेलाल ने एक लंबी कूद तख्ती पर दे मारी, जहां ठाकुरों की मूर्तियां रखी हुई थी और दूसरी कूद में वह नजरों से ओझल हो गया। भूरेलाल द्वारा उस जगह लंबी छलांग लेने के कारण ठाकुरों सहित तख्ती भड़भड़ा कर नीचे आ गिरी। पानी से भरा कमंडल वहीं जमीन पर बिखर गया। देख कर बाबा को क्रोध आ गया। उन्होंने फुर्ती से इधर-उधर देखा। भूरेलाल कहीं सामने पड़ जाए, तो चिमटे से उसका काम-तमाम कर दें। लेकिन वह हाथ आने वाली चीज तो था नहीं। अपनी ताजगी

और फुर्ती का एक नमूना वह बाबा के सामने पेश कर गया था। बाबा ने भी समझ लिया वह इतनी साधारण चीज नहीं है कि आसानी से पकड़ में आ जाए।

अब तो यह भी बताना पड़ेगा कि वह घर किसका था। भूरेलाल का दावा था कि—घर उसी का है, यह बात उसकी हरकतों से मालूम होती थी। सुबह-शाम अथवा आधी रात के वक्त जब भी उसका मन करता, वह निस्संकोच कुटिया में घुस आता। वहां के सभी कोने झांक लेने के बाद जो चीज पसंद आती, उसे स्वाद से खाने लगता। इसके बाद अंदर-बाहर चहल-कदमी करता। उसे इस बात की तनिक भी चिंता नहीं थी कि दूसरा प्राणी भी इस घर में रह रहा है।

बाबा का कहना था कि भूरेलाल ने कुटिया में जबरन घुसपैठ कर रखी है . . . अब ऐसी हालत में इसका जाना मुश्किल लगता है। इसे वह बाप का घर समझा बैठा है। लेकिन सच्चाई तो यह थी कि जब बाबा यहां आए थे, तब भूरेलाल का कहीं पता भी नहीं था। बहुत पहले बाबा ने इस जगह की तलाश की थी। इन्हीं चट्टानों के बीच अपने रहने के लिए कुटिया बनाई और शांति से रहने लगे थे। अपना नित्य-कर्म, पूजा-पाठ और भजन करने के बाद जो समय मिलता उसमें कुटिया के आस-पास उगे झाड़-झंखाड़ की सफाई करते। आड़े-तिड़छे खड़े पत्थरों को सीधे बिठा कर खाइयों को पाटते रहे। फिर उन्होंने ऊबड़-खाबड़ जमीन को समतल बनाया।

बाबा को पेड़-पौधे लगाने का शौक था। जंगल में जाकर तरह-तरह के पौधे ले आए। कुटिया के चारों तरफ अपने हाथों से उन्हें जमाया, पानी से सींचा और उनकी सुरक्षा का प्रबंध भी कर दिया। पेड़-पौधे बड़े हुए, तो मौसम आने पर फल-फूलों से स्थान की शोभा बढ़ गई। अब वह एक आश्रम की तरह लगने लगा।

बाबा के भक्त और दूसरे लोगों को जब मालूम हुआ, तो वे भी बाबा के पास आने लगे। बाबा उन्हें ज्ञान-ध्यान की बातें सुना देते।

वहां कई तरह की परेशानियों को देखते हुए भक्तजनों ने कुटिया के पास ही बाबा के लिए एक कमरा बना दिया, ताकि वे स्वतंत्र रहकर अपनी साधना कर सकें।

बाबा खुश थे कि अब भूरेलाल की संगत से छुटकारा मिल जाएगा। कुटिया में रहते हुए उसने कौन-सा अत्याचार नहीं किया। वह हर वक्त दिलो-दिमाग पर बोझ बना रहता था। हर वक्त बाबा के मन में आशंका रहती थी कि भूरेलाल जाने कब क्या कर दे। उसके कारनामों को देखकर कभी-कभी तो आश्चर्य होने लगता था। भूरेलाल कभी-कभी ऐसे काम भी कर देता था, जिन्हें कर पाने में बाबा स्वयं को भी असमर्थ पाते थे। अपनी हरकतों से उसने बाबा को पूरी तरह आतंकित कर दिया था।

बाबा कुटिया को छोड़ कर कमरे में चले आए। बल्कि कहना चाहिए कि भूरेलाल ने ही उन्हें जाने के लिए मजबूर कर दिया था। इस नए घर में प्रवेश करने के बाद बाबा ने अपनी सुविधानुसार

चीजों को रखने की जगह बना ली। आसन के पास ठाकुरों की मूर्तियां स्थापित कर दीं। बगल में धूनी जमाई। वहीं दीवार से सटा कर खाने-पीने का सामान, प्लास्टिक के डिब्बे और कनस्तरों को रखा। कुछ छोटे-बड़े डिब्बों को दीवार पर जड़ी तख्तियों के ऊपर सजा दिया। दीवारों पर कीलें गाड़ कर कपड़े टांग दिए। बाबा के पास इतना ही सामान था। उसकी ठीक-ठीक व्यवस्था हो जाने पर वे निश्चिंत हो गए थे। उन्हें लग रहा था कि भूरेलाल से छुटकारा मिल गया है। लेकिन कुछ दिन बाद भूरेलाल ने वहां भी अपनी घुसपैठ शुरू कर दी थी। इसे भी वह अपना घर समझने लगा। वह उनकी साधना में विघ्न तो डाल ही रहा था, साथ ही उसने कई तरह के नुकसान भी कर डाले थे। बाबा कहते थे कि–भूरेलाल, चाहे तो खाने वाली चीजें खा ले। उसके लिए हम मना नहीं करते। लेकिन जिन चीजों से उसका कोई मतलब नहीं, उन्हें छेड़ने से क्या फायदा। कल रात को ही वह नई लूंगियां कुतर गया था। पूछो तो .... महात्मा की लूगियों से उसका क्या वास्ता .... ?"

एक दिन सुबह जब वे गंगा-स्नान से लौटे, तब उन्होंने देखा कि उनकी माला गायब है। माला को उतार कर ठाकुरों के आगे रखा था। उन्हें समझ नहीं आया कि वह इतनी जल्दी कहां खो गई। बाबा कमरे में इधर-उधर तलाश करने लगे। वे सोचने लगे – "भूरेलाल ही उड़ा ले गया होगा। लेकिन वह यहां आया, तो कैसे आया ? दरवाजा पूरी तरह बंद था। भूरेलाल तो क्या .... उसकी हवा भी कमरे में नहीं पहुंच सकती थी" बाबा आश्चर्य में पड़ गए। देर तक खोज करने पर भी जब कहीं पता न चला, तो उसके बिना ही काम चलाना पड़ा। अगले दिन उन्होंने अपने एक भक्त से नई माला मंगवा ली। लेकिन आश्चर्य बना रहा कि इस तरह बंद कमरे से बाहर कोई चीज जा कैसे सकती है।

भूरेलाल के वहां आने का विश्वास उन्हें तब हुआ, जब उसने तख्तियों पर सजा कर रखे हुए बड़े डिब्बे को खोल कर नीचे गिरा दिया था। उस दिन शाम के वक्त जब वे भिक्षा लेकर लौटे, तो देखा कि डिब्बा खुला पड़ा था। उसमें रखी हुई हवन-सामग्री जमीन पर बिखरी पड़ी थी। इतनी मजबूती से बंद किए ढ़क्कन को खोलना आसान नहीं था। बाबा जब इसे खोलते थे तो ढ़क्कन के एक कोने पर चिमटे की नोंक अड़ा कर जोर लगाना पड़ता था। भूरेलाल ने कैसे खोल दिया ! बाबा आश्चर्य से नीचे बिखरी हुई सुपारियों और धूप की गांठों को देखने लगे। इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि वह कमरे में पहुंचा, तो कैसे ? बाबा ने चारों तरफ नजर दौड़ाई, लेकिन भूरेलाल के वहां आने का कोई रास्ता दिखाई न दिया। " वाह बेटा .... तेरा भी जबाब नहीं। तू आया तो जरूर था, पर आया किधर से"– कह कर बाबा गुस्से को पी गए। सोचने लगे, अब जिस दिन वह कमरे में दिखाई देगा, बच नहीं पाएगा। मेरे रहते हुए कमरे में आए तो सही, मजा चखा दूंगा। मार-मार कर भुर्ता बना डालूंगा। लेकिन मेरी उपस्थिति में वह आएगा ही क्यों ? वह तो चोरी से आएगा। चोर में ऐसा साहस हो कि वह दूसरों के सामने आए, तो उसे चोर कौन कहेगा ? भूरेलाल पक्का चोर है।

UDAYSHANKAR.

बिखरी हुई चीजों को उठा कर डिब्बे में भरते हुए बाबा को क्रोध आ रहा था। बोले, " इतना नुकसान करके चला गया। क्या पता यहीं-कहीं बैठा हो।" वे भूरेलाल को ललकारते हुए बोले, "अबे, कहीं छिपकर बैठा है, तो निकल आ .... सामने आकर दिखा ....। ईमानदारी तो इसी में है कि जो करना है, वह सामने किया जाए। चोरी और धोखे से करने का मतलब अपने को भी धोखे में डालना है। ...."

बाबा कहते जा रहे थे। भूरेलाल वहीं एक कोने में दुबका बैठा था। बाबा की ललकार को वह भी सहन न कर सका। कोने से निकल कर उसने एक कूद तख्ती पर लगाई और एक दूसरा डिब्बा नीचे गिरा दिया। इतना कर चुकने के बाद भूरेलाल वहीं तख्ती के नुक्कड़ पर बैठ कर बाबा को देखने लगा। जैसे कह रहा हो कि ' लो .... मैं सामने आ गया हूं।'

बाबा ने पलट कर देखा, " वाह बेटा .... अब आया तू सामने।" धीरे-से उठकर दरवाजा बंद किया। इसके अलावा और कोई रास्ता वहां नहीं था, जहां से भूरेलाल भाग सकता। बाबा ने एक बार फिर इधर-उधर देखा और छड़ी हाथ में ले ली। फिर एक कदम आगे बढ़ कर वहीं खड़े हो गए।

भूरेलाल बैठा रहा। एक कदम और आगे बढ़ कर बाबा बोले, " अब पहले मुझे इतना बता दे कि तू यहां आया किस रास्ते से है ? हरामखोर ! उस कुटिया से तो तूने मुझे भगा दिया, अब यहां से भी भगाना चाहता है ? आज तुझे साफ बताए देता हूं यहां आएगा तो पिट जाएगा।" कहते हुए बाबा एक कदम और आगे बढ़े तथा अपना छड़ी वाला हाथ ऊपर उठा लिया।

भूरेलाल पर कोई असर नहीं हुआ। वह बाबा की तरफ इस आत्मविश्वास के साथ देख रहा था, जैसे बाबा उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। बाबा ने धीरे-से कदम आगे बढ़ाया। अब वे भूरेलाल के इतने पास थे कि उनकी छड़ी आसानी से भूरेलाल के सिर पर आ सकती थी। देख कर भूरेलाल भी एक बार हड़बड़ा गया। वह चिक् .... चिक् .... करता हुआ कुछ कदम पीछे हटा और फिर उसी नुक्कड़ पर आ बैठा।

बाबा को लगा कि भूरेलाल उन्हें धमका रहा है। जैसे वह बाबा की हंसी उड़ा रहा हो कि तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। बाबा चिढ़ गए। बोले, ".... मेरा ही नुकसान किया और उल्टे मुझे ही घुड़की दे रहा है।" बाबा ने अपना ऊपर उठा हाथ फुर्ती से नीचे झटक दिया। भूरेलाल को समझते देर न लगी कि उसके सिर को ही निशाना बनाया गया है। उसने भी फुर्ती से अपना सिर बचा लिया, पर छड़ी उसकी कमर के बीचोंबीच जा पड़ी। देखते-देखते वह उलट कर नीचे आ गिरा उसके हाथ-पैर कांपने लगे और फिर वह शांत हो गया।

"अरे यह तो मर गया है !" बाबा को मन ही मन पश्चाताप होने लगा। वे सोचने लगे–" मैंने हत्या कर दी है, निरीह प्राणी की हत्या ....। पाप का बोझ सिर पर लद गया है। भूरेलाल बड़ा तीसमार बनता था। लगता तो ऐसा था कि बंदूक की गोली से भी नहीं मरेगा। एक मामूली-

UDAYSHANKAR

सी चोट भी सहन न कर सका। अब इसे जल्दी बाहर फेंक देना चाहिए।" सोच कर धूनी से चिमटा उठाया, पलट कर देखा तो भूरेलाल गायब हो चुका था।

"•••• तो क्या वह मरा नहीं था। बड़ा उस्ताद है •••• हमका बेवकूफ बना गया। अगर मालूम होता कि मरा नहीं है तो दो-चार और जमा देता, जान से ही छुट्टी कर देता।" वे भूरेलाल को इधर-उधर तलाशने लगे। उसके कपट व्यवहार ने बाबा के क्रोध को भड़का दिया था। फिर भी बाबा को संतोष था कि अब भूरेलाल यहां नहीं आएगा। इस बात को वह भी समझ गया होगा कि कमरे में जाना खतरे से खाली नहीं है।

उसकी कमर पर पड़ी छड़ी ही भूरेलाल के लिए चेतावनी है। कम-से-कम हफ्ते भर वह कमर सीधी नहीं कर सकेगा। अब वह आएगा भी नहीं। यह सोच कर बाबा निश्चिंत हो गए। लेकिन अगले ही दिन भूरेलाल ने आकर बाबा की नई धोती कुतर डाली। इतना बड़ा छेद कर दिया कि पूरा आदमी उसमें से होकर निकल सकता था। देख कर बाबा घबरा गए कि भूरेलाल बदला लेने पर उतर आया है। बदले की भावना बहुत खतरनाक होती है। अब तो वह रोज कमरे में आ पहुंचता था। वह कब आता था और उसके आने का रास्ता कौन-सा था— काफी खोज करने पर भी मालूम न हो सका।

UDAYSHANKAR.

सर्दियों के दिन थे। बाहर काफी ठंड पड़ रही थी। तभी एक दिन बाबा ने देखा कि भूरेलाल धूनी के पास बैठा कुछ खा रहा था। आज बहुत दिनों के बाद वह सामने आया था। भूरे ने बाबा को देख लिया, पर अपनी जगह से नहीं हटा। खाना छोड़ कर बाबा को टकटकी लगाए देखता रहा। दोनों एक-दूसरे को देखते रहे थे। मानो बहुत दिनों बाद मिलने की इच्छा पूरी कर रहे हों।

बाबा के मन में दया भाव उमड़ आया– बेचारा निरीह प्राणी .... अपने मन की बात कहने में असमर्थ है। उन्हें लगा कि भूरेलाल अत्यंत दयनीय दृष्टि से उन्हें देख रहा है। जैसे वह अपने अपराधों की क्षमा मांग रहा हो। बाबा ने भी उसे क्षमा कर दिया और उसके अपराधों को भूल गए। बोले, " कोई बात नहीं भूरेलाल। गलतियां सबसे होती हैं। रास्ता भटक जाने के बाद भी कोई रास्ते पर आ जाता है, तो उसे भटका हुआ नहीं कहते। .... मैं तो कब से कह रहा था कि शरारत करना छोड़ दे। तुझे जो चाहिए मुझसे ले। चोरी करके खाना अच्छी बात नहीं। किसी से छल-कपट करना तो और भी बुरा है। चतुराई हमेशा काम नहीं आती भूरेलाल। इन सब कामों को छोड़ दे, तभी तू आराम से रह सकता है। ...."

बाबा कहते जा रहे थे और भूरेलाल चुपचाप सुनता रहा। धूनी के पास उसे निश्चिंत बैठा देख कर बाबा बोले, "आज ठंड भी कुछ ज्यादा बढ़ गई है। तू वहीं बैठ कर धूनी सेंक ले, तब तक मैं ठाकुरों को धूप-बत्ती दिखाता हूं।" कहते हुए बाबा दो कदम ही आगे बढ़े थे कि भूरेलाल ने एक लंबी छलांग ली और कोने में दुबक गया।

बाबा ने देखा कि उसकी पूंछ सफेद पड़ गई है। मन ही मन सोचने लगे, क्या हो गया भूरेलाल को। कोई बीमारी तो नहीं लग गई ?

ठाकुरजी की पूजा का समय हो गया था। इसलिए वे उधर अधिक ध्यान न देकर आसन के पास चले आए। ठाकुरजी को स्नान करा चुकने के बाद उन्होंने देखा कि दिया अपनी जगह से दूर उलटा पड़ा था। उसमें बत्ती भी नहीं थी। भूरेलाल ने बत्ती को खाकर दिए को वहीं उलटा कर दिया था। बाबा ने बत्ती बना ली। देखा कि घी का डिब्बा औंधा पड़ा था। देख कर हैरानी हुई। उसमें बत्ती के लिए जो थोड़ा-बहुत घी पड़ा था, भूरेलाल उसे भी चट कर गया था। उसका मुंह डिब्बे के अंदर जहां तक जा सकता था, वहां तक भूरेलाल उसे चाट लिया था। लेकिन जहां उसकी पहुंच नहीं थी, वहां अपनी पूंछ फेर कर उसने घी को इस तरह निकाल लिया था जैसे किसी ने उंगली फेर कर साफ कर दिया हो। देख कर बाबा उबल पड़े– " तू ऐसे नहीं मानेगा।" चिमटा उठा कर इतने जोर से कोने में दे मारा कि भूरेलाल वहीं लकड़ियों के ढ़ेर में जा छिपा।

बाबा ने दरवाजा बंद किया और लकड़ियों को उलटने-पलटने लगे –" आज तेरी खैर नहीं .... तेरी हरामखोरी निकाल कर ही रहूंगा।

UDAYSHANKAR.

उनके क्रोध को देखते हुए भूरेलाल भी समझ गया कि आज सचमुच छोड़ेंगे नहीं। वह भी तेज हो गया। वह एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ता रहा और बाबा को भी दौड़ाता रहा। वह चाहता तो अपने चोर रास्ते से कब का निकल गया होता, लेकिन वह किसी को इस रास्ते का पता नहीं देना चाहता था। भूरेलाल करता भी क्या . . . जितना वह बाबा की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश करता, उतना ही अधिक क्रोध का पात्र बनता जाता। उसे पकड़ने के चक्कर में कई चीजें टूट-फूट गईं। देर तक उछल-कूद करने के कारण दोनों हांफ गए, पसीना-पसीना हो गए। न भूरेलाल काबू में आया और न ही बाबा उसे छोड़ देना चाहते थे।

अंत में भूरेलाल को मैदान छोड़ देना पड़ा। इस बीच बाबा के दो-एक करारे हाथ भूरेलाल को पड़ चुके थे और वह घबरा गया था। बाबा को चकमा देने की ज्यादा कोशिश की, तो कहीं जान से न हाथ धोना पड़ जाए सोच कर किसी बात की परवाह किए बिना भूरे ने एक लंबी कूद ठाकुरों के ऊपर लगाई और वहां से चंपत हो गया।

बाबा ने सोचा कि अब वह भाग नहीं सकेगा। दरवाजा बंद है। इसके अलावा निकल भागने का और कोई रास्ता नहीं था। बोले, "अब तू सही ठिकाने पर पहुंचा है . . . . देखता हू बच कर कहां जाता है।"

बाबा दबे पांव आसन के पास गए। धीरे-से ठाकुरों को हटाया, फिर तख्ती को अलग किया। यहीं-कहीं पत्थरों के बीच बैठा होगा। दाएं हाथ में चिमटा लिया और बाएं हाथ से पत्थर हटाने लगे। तभी उन्होंने देखा, भूरेलाल ने पत्थर के नीचे सुरंग खोद रखी है और उसी सुरंग से वह कब का जा चुका था। पहले भी वह कई बार चकमा देकर इसी तरह गायब हुआ था। शायद कमरा बनने के साथ-साथ भूरेलाल ने यह सुरंग भी तैयार कर ली थी। बाबा निरुत्तर हो गए। अब क्या किया जाए ?. . . .

अब तो दिनों-दिन भूरेलाल की हरकतों में तेजी आने लगी। बाबा ने एक सुरंग बंद की, तो भूरेलाल ने दूसरा मोर्चा तैयार कर लिया, फिर तीसरा और चौथा ....। इस तरह जमीन के अंदर छोटी-बड़ी अनेक सुरंगे भूरेलाल ने तैयार कर दीं। बाबा कहां तक उन्हें बंद कर पाते। इस तरह वहां भी भूरेलाल का एक-छत्र साम्राज्य स्थापित हो गया। दिन हो या रात, जब कभी उसका मन करता वह कमरे में आकर अपनी कूद-फांद शुरू कर देता। बाबा डराने-धमकाने की चेष्टा करते, तो भूरेलाल तुरंत मोर्चा संभाल लेता। फुर्ती से अपने बंकर में घुस कर मुंह बाहर निकाल कर मूछें हिलाता, कभी चिक् .... चिक् करता और कभी हवा को सूंघता रहता। जैसे इन सब हरकतों के द्वारा वह बाबा को याद दिला रहा हो कि तुम मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

इस तरह भूरेलाल ने अपना पराक्रम दिखा कर बाबा को परास्त कर दिया था। बाबा चिंतित रहने लगे, अब क्या किया जाए। उसने ज्ञान-ध्यान चौपट कर दिया था।

इस संकट से बचने का उन्हें एक ही उपाय समझ में आ रहा था कि एक बिल्ली रख ली जाए। अगले ही दिन उनका एक भक्त बिल्ली का बच्चा ले आया और बाबा ने उसके लिए दूध का इंतजाम भी कर दिया। सोचा, कुछ दिनों की बात है, बड़ी हो जाएगी तो अपना भोजन स्वयं प्राप्त कर लेगी।

बाबा उसकी सेवा-सुश्रुषा में लग गए। उन्हें संतोष था कि एक दिन वह भूरेलाल की गर्दन पर सवार होकर उसका काम-तमाम अवश्य कर डालेगी। वही संकट से छुटकारा दिलाएगी। जब-जब बाबा उसकी तरफ देखते, तब-तब उन्हें लगता कि सारे संकट दूर हो गए हैं। बाबा ने उसका नाम संकटमोचनी रख दिया।

संकटमोचनी के आने पर भूरेलाल कई दिन तक दिखाई नहीं दिया। शायद डर गया था। क्या मालूम, कहीं भाग गया हो। बाबा मन-ही-मन खुश हुए। एक दिन वे संकटमोचनी को गोदी में बिठा कर उसकी पीठ पर हाथ फेर रहे थे। तभी देखा, सामने वाले छेद से भूरेलाल गर्दन उचका कर देख रहा था। वह बाहर निकलना चाहता था, पर निकलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

देख कर बाबा बोले, "अबे निकल आ भूरेलाल .... देखता क्या है, आज तो कई दिन के बाद दिखाई पड़ा है। लेकिन अब तू निकलेगा भी कैसे ? तेरी नानी जो आ गई है। बाहर निकलेगा, तो यह तुझे कच्चा चबा जाएगी।"

भूरेलाल कुछ देर यूं ही देखता रहा। उसने इस बांत को अच्छी तरह समझ लिया था कि बिल्ली में उतना दम नहीं है। यदि उसने पकड़ भी लिया तो वह उससे भिड़ जाएगा। शायद यही सोच कर वह तैयार होकर बिल से बाहर निकला और अगले पंजे उठा कर हवा में सूंघने लगा।

UDAYSHANKAR.

उसकी यह हरकत देख बाबा ने संकटमोचनी को उकसाते हुए आगे किया, " जा पकड़.... धर ले पापी को.... चढ़ जा इसकी गर्दन पर....।" बाबा ने उसे आगे धकेला ही था कि भूरेलाल ने एक लंबी छलांग ली और दूसरे छेद में घुस गया।

संकटमोचनी यह देखकर डर गई। वह फुर्ती से पलट कर बाबा की टांगों के बीच दुबक गई। देख कर भूरेलाल का साहस और बढ़ गया। अगले दिन बाबा के देखते-देखते वह संकटमोचनी के ऊपर ही कूद पड़ा। बाबा वहां न होते, तो शायद उसे मार ही डालता। कई बार उसके दौड़ने पर संकटमोचनी को बाबा की शरण में आकर जान बचानी पड़ी।

बाबा परेशानी में पड़ गए। यह हरामखोर अब उसे भी चैन से नहीं रहने देगा। दिन-रात उसी की चिंता रहने लगी कि भूरेलाल से उसकी रक्षा कैसे की जाए? मेरे न रहने पर यदि वह संकटमोचनी को इसी तरह दौड़ाता रहेगा, तो वह मर ही जाएगी।

भूरेलाल इस बात से चिढ़ गया था कि बाबा उसे क्यों ले आए हैं। अपनी स्वतंत्रता में वह बाधा पड़ते देखना नहीं चाहता था। शायद इसीलिए दूसरी चीजें छोड़ कर संकटमोचनी पर ही घात लगाए रहता।

एक दिन संकटमोचनी अचानक गायब हो गई। कहां चली गई, मालूम न हो पाया। सुबह से शाम तक बाबा उसकी तलाश करते रहे। रोज की तरह सुबह के वक्त बाबा के साथ उठ कर वह भी ऐसी बाहर निकली कि लौट कर न आई। बाबा ने उसे चारों तरफ ढूंढा। कुटिया के भीतर देखा, संकटमोचनी वहां भी नहीं थी। आस-पास झाड़ियों में तलाश किया, खंदक, खाइयों के पास उसका नाम लेकर बुलाया। लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला। तब उन्हें भूरे का ख्याल आया, वही दौड़ा कर जाने कहां ले गया होगा। बेचारी जंगल में भटक रही होगी। निश्चय ही यह भूरे की शरारत है, क्योंकि वह संकटमोचनी को चाहता जो नहीं था।

कई दिनों तक खोज करने पर भी संकटमोचनी का पता न चला। फिर भी बाबा को उसकी तलाश रहने लगी।

UDAYSHANKAR.

एक दिन बाबा आश्रम से बाहर उसकी तलाश में निकले। तभी एक झाड़ी के अंदर सूखे पत्तों की सरसराहट सुनाई पड़ी। झांक कर देखा कि भूरेलाल वहां बैठा था। बाबा ने उसे पहचान लिया। बाबा को उत्सुकता हुई कि वह पत्तों के बीच छिप कर क्यों बैठा था ? बाबा वहीं खड़े होकर देखने लगे। थोड़ी देर में मालूम हुआ कि भूरेलाल किसी से लड़ रहा था। उन्होंने भूरेलाल को दो-एक बार उछलते देखा, वह फिर छिप गया।

देखा कि एक नेवला भूरेलाल के पीछे लगा है, जिससे डर कर वह कभी तेजी से भागता था और कभी सूखे पत्तों की ओट लेकर छिप जाता था।

बाबा देर तक वही देखते रहे। एक ही रंग, एक ही कद और एक ही तरह की चुस्ती-चालाकी से दोनों एक-दूसरे को नीचा दिखाने के दांव-पेंच लगा रहे थे। और कभी आपस में लिपट कर ऊपर-नीचे हो रहे थे। लेकिन भूरेलाल लिपटने का मौका नहीं दे रहा था। सूखे पत्तों के बीच कहीं से कहीं निकल कर अपनी जान बचाए फिरता था। देर तक छिपे रहने के बाद जब भूरेलाल ने पत्तों के बीच से गर्दन उचकाई, तो नेवले ने उस पर छलांग लगा दी। भूरेलाल तेजी से उछला और लंबी दौड़ लगाई। नेवला भी तेजी से उसके पीछे भागा और खदेड़ते हुए दूर ले गया।

बाबा वहां जा नहीं सकते थे, अतः वापस लौट आए। सोचने लगे, गुरु मिल गया है.... जाने कितनी दूर भगा कर ले गया होगा। बड़ा उस्ताद बना फिरता था। क्या मालूम, नेवला उसे मार ही डाले। नेवले की पकड़ में आ गया, तो वह उसे छोड़ेगा नहीं। पर भूरेलाल को पकड़ लेना इतना आसान नहीं था।

संकटमोचनी के मिलने की अब कोई उम्मीद नहीं थी। कई दिन हो गए, भूरेलाल भी लौट कर न आया। कहां चला गया ? शायद नेवले ने उसका काम-तमाम कर दिया हो। चलो.... संकटों से तो छुटकारा मिल गया ! लेकिन बाबा को उसके बिना अच्छा नहीं लग रहा था। जबकि उसके रहते हुए बाबा चुप नहीं बैठते थे, वह कोई न कोई समस्या खड़ी किए रहता था। बाबा को चुप्पी का वह वातावरण खलने लगा। वे दिनों-दिन उदास रहने लगे।

कहते हैं शैतान के बारे में सोचने से वह हाजिर हो जाता है। बाबा ने भूरे को याद किया, तो वह कमरे में आ पहुंचा। देख कर बाबा आश्चर्य में पड़ गए। बोले, "तू कैसे आ गया ? हम तो समझे थे कि तेरा काम-तमाम हो गया होगा। वह तुझे छोड़ने वाला नहीं था। तू उसे जरूर धोखा देकर ही आया होगा। उसकी आंखों में धूल झोंक कर बच निकला होगा। अब बच के आ ही गया है, तो कुछ दिन आराम से रह ले ....। कहता हूं कि हरामखोरी छोड़ दे हर वकत जान को खतरे में डाल कर जीना भी कोई जीना है। .... कहीं किसी ने झपट लिया, तो बीबी-बच्चे तेरी जान को रोते फिरेंगे। .... पर क्या मालूम, तेरे बीबी-बच्चे हैं भी या नहीं।" कह कर बाबा अपने काम में लग गए और भूरेलाल भी अपने छेद में पहुंच गया।

भूरेलाल जब-जब कमरे में पहुंचता, बाबा उसे समझाते और प्रेम से दो बातें भी करते थे। लेकिन भूरेलाल पर बातों का कोई असर नहीं हुआ। चीजों की उलट-पलट करना, उन्हें बेकार कर देना या फिर ले जाकर अपने बिल में ठूंस देने का उसका कार्यक्रम चलता रहा। रोजाना उसकी वहीं हरकतें देखते हुए बाबा भी लापरवाह हो गए– अब उससे कहां तक भिड़ा जाए। भूरेलाल मूर्ख है। मूर्ख को समझाने से अपना ज्ञान-ध्यान भी चला जाता है।

बाबा ने लापरवाही कर दी, तो भूरेलाल और अधिक तेज हो गया तथा एक दिन अपने परिवार को लेकर कमरे में आ धमका।

उस दिन भूरे ने सारे कमरे की छान-बीन कर डाली। छिपा कर रखी हुई चीजें खींच कर सामने ले आया। तख्ती के ऊपर रखे डिब्बों को खोल कर नीचे फेंक दिया। रुई की गांठ, धूप के पैकिट, दाल, मिर्च-मसाले और कई चीजें बिखरा दीं। भूरी और उसके चारों बच्चे उछल-उछल कर चीजों का स्वाद ले रहे थे। बाबा तो केवल दरवाजे पर खड़े देखते रहे

दरवाजा खुलते ही भूरेलाल चंपत हो गया। वह जानता था कि बाबा के अलावा यहां कोई दूसरा नहीं आ सकता। वह इस बात को भी महसूस कर रहा था कि उन्होंने बहुत बड़ा अपराध कर दिया था और बाबा उसे देखते ही भड़क जाएंगे। पकड़ तो नहीं सकेंगे, पर कहीं गुस्से में बीबी-बच्चों के सामने चिमटा दे मारा, तो बेइज्जती होगी। सोच कर वह बाबा के वहां पहुंचते ही बिल में घुस गया।

बाबा को दरवाजे पर खड़े देख भूरी और उसके चारों बच्चे हड़बड़ा कर इधर-उधर भागने लगे। उन्हें कोई छेद नहीं दिख रहा था। केवल भूरी को छेदों की जानकारी थी और वह भाग भी सकती थी, पर बच्चों को छोड़ कर वह कैसे जाती। इस भगदड़ में बच्चे भी इधर-उधर बिखर गए थे। कोई इस कोने में जा छिपा, तो कोई दूसरे कोने में छिपने की जगह ढूंढ रहा था।

भूरी एक डिब्बे के पीछे दुबक कर बाबा को देखने लगी। जाने क्या कर रहे हैं, कहीं बच्चों पर धावा बोल दिया तो . . . . । यही देखने के लिए वह बाबा पर नजर रखे हुए थी।

बाबा ने उसे डिब्बे के पीछे छुपे देख लिया था। भूरेलाल की तरह वह भी स्वस्थ और फुर्तीली लग रही थी। लेकिन इस वक्त भूरी की जान संकट में आ पड़ी थी। बच्चे इधर-उधर हो गए थे, किसी को रास्ते का पता नहीं था। पहली बार यहां आए और बुरी तरह फंस गए थे। वह कभी छिप कर कोने की तरफ झांकती और कभी बाबा की तरफ देखती। कहीं वे बच्चों के साथ छेड़खानी न कर बैठें।

उसे परेशानी में देख कर बाबा को दया आ गई। भूरी का क्या अपराध था। अपराधी तो वही है, जो बच्चों को भी घुसपैठ करना सिखा रहा है। मां-बाप बच्चों को जो सिखाएंगे, बच्चे वही करेंगे। उन बेचारों का क्या दोष है।

बाबा को इस बात का दुख नहीं था कि भूरेलाल ने नुकसान कर दिया है, दुख इस बात का था कि वह अपने परिवार को संकट में डाल कर भाग कैसे निकला। " मक्कार कहीं का . . ." बाबा बड़बड़ा उठे– " जो अपने ही परिवार के साथ कपट कर सकता है, वह दूसरों के साथ क्या ईमानदारी बरतेगा।"

बाबा जमीन पर बिखरी चीजों को इकट्ठा करने लगे। साथ ही उनका बड़बड़ाना जारी रहा। " देखते ही भाग गया . . . .। भागता नहीं, तो क्या करता . . . .। वह दुष्ट है, कायर है, कायर इसी तरह भागते हैं। इतना नुकसान कर दिया है . . . .। जानता है कि पकड़ा गया, तो चमड़ी उधेड़ दी जाएगी। जो अपराध करता है, वही डरता है। जिसका मन साफ होता है, उसे किस बात का डर . . . . ?"

देर तक बाबा चीजें संभालते रहे। फिर झाड़ू से कमरे की सफाई की और हाथ-पांव धोकर आसन पर आ बैठे। तभी डिब्बे की ओट में भूरी दिखाई दी। बोले, " तू अब तक वहीं बैठी है। भूरेलाल तो अपना कमाल दिखा कर चला गया, अब तू क्या दिखांना चाहती है ? तू भी अपना रास्ता ले। अपने बच्चों को बुला और खिसक जा यहां से . . . .। . . . . एक बात और सुन ले, जब मैं ध्यान में हुआ करूं, तब बच्चों को लेकर न आया कर। मैं जानता हूं कि तुम लोग मुझे यहां भी रहने न दोगे।" कह कर पूजा की तैयारी में लग गए।

भूरी ने चुपके-से चारों कोनों का चक्कर लगा कर, बच्चों को अपने साथ कर लिया। वह उन्हें जल्दी से किसी छेद में डाल देना चाहती थी। लेकिन बच्चों को कुछ मालूम नहीं हो रहा था कि मां क्या चाहती है, उन्हें कहां ले जाना चाहती है। वे इधर-उधर भटकने लगे। भूरी एक को ले जाकर बिल में छोड़ आती और जब दूसरे को लेकर वहां पहुंचती, तब तक पहले वाला बिल से निकल कर बाहर आ जाता। इस तरह उन्हें देखते - संभालते भूरी परेशान हो गई। बच्चे थे कि बिल्कुल डरते नहीं थे। शायद बिल के अंदर जाना उन्हें पसंद नहीं था। लाख प्रयत्न करने के बावजूद भूरी उन्हें संभाल न सकी। यह देख कर बाबा बोले– "अरे बच्चे जब जाना नहीं चाहते,

UDAYSHANKAR.

तो तू उन्हें जबरन क्यों बिल में घुसेड़ना चाहती है। रहने दे .... बच्चे हैं। बच्चों को किस बात का डर है। उन्होंने कोई अपराध तो किया नहीं है कि डर जाएं ? बच्चों को रहने दे।" कह कर बाबा कोने में उछलते हुए बच्चों की तरफ प्यार से देखने लगे। फिर उन्हीं की तरह मुंह से चूं-चूं की आवाज निकालकर उन्हें अपनी तरफ बुलाने लगे।

भूरी ने देखा की बच्चे उछलते-कूदते बाबा की तरफ बढ़ते जा रहे थे। वह मन-ही-मन डर गई। सोचा, बाबा के पास जाने से उन्हें रोक लिया जाए। लेकिन भूरी क्या करती ....। वह बाबा के सामने नहीं आना चाहती थी। कोने से निकल कर दो कदम आगे आती और फिर पलट कर वहीं दुबक जाती।

चारों बच्चे बाबा के पास पहुंच गए। बाबा ने उन्हें पास से देखा, पुचकारा .... और एक को अपने हथेली पर ही बिठा लिया। बाबा उनके साथ खेलने लगे। वे कभी फूंक मार कर उन्हें डरा देते, किसी की पूंछ पकड़ कर उसे उठा देते, कभी कोई चीज किसी के मुंह में डाल देते, जिससे वह उसे चपर-चपर करके खाने लगता।

तभी बाबा को याद आया, भूरेलाल सौंफ बड़े चाव से खाता है। दो ही दिन के अंदर उसने पूरा डिब्बा खाली कर दिया था। जो बच गई थी, बाबा ने उसे डिब्बे से निकाल कर पोटली बना कर सिरहाने के नीचे रख लिया था। उस पोटली को खोल कर, बाबा ने सौंफ के दाने बच्चों के आगे डाल दिए। बच्चों को मानो उनका मन-पसंद-भोजन मिल गया। वे सारी सौंफ देखते-देखते चट कर गए।

थोड़ी देर बाद बाबा ने उन्हें विदा किया, "अब जाओ। मुझे भी अपना काम करना है।"

कोने में बैठी हुई भूरी यह सब देख रही थी। वह समझ गई कि बाबा से बच्चों को कोई खतरा नहीं है। बाबा किसी से घृणा नहीं करते। बच्चों के इधर-उधर भटकने से पहले ही उसने चारों को एक जगह इकट्ठा किया और एक-एक कर उनका मुंह सूंघने लगी। फिर वह सबको साथ लेकर बिल में घुस गई।

यह कार्यक्रम कई दिन तक चलता रहा। भूरेलाल तो कहीं दिखता नहीं था, किंतु भूरी रोज बच्चों को लेकर कमरे में पहुंच जाती और वहीं कोने पर दुबक कर देखती रहती। बाबा बच्चों के साथ अच्छी तरह घुल-मिल गए थे। वे रोज उनके लिए अपने सिरहाने कुछ-न-कुछ ला रखते। यदि कभी उनका आना न होता, तो अगले दिन पूछ-ताछ होती, साथ ही उन्हें खबरदार कर दिया जाता– " देखना बे . . . . अपने बाप की सीख मत लेना। वह बड़ा दुष्ट है। अब देखो, इतने दिनों से आया भी नहीं। जाने कहां-कहां टक्करें मारता फिरता होगा। कभी चैन से नहीं बैठता। हम तो कहते हैं, शांति से रहो। हम किसी को बुरा नहीं कहते। संन्यासी लोगों को किसी से क्या लेने-देना ? हमारे लिए तो सब बराबर हैं। लेकिन वह तो पूरा खुराफाती है। उसकी सीख पर चलोगे, तो नुकसान उठाओगे। इसलिए सावधान कर रहा हूं।"

बाबा रोज मूंगफली, चने, मटर और दूसरी चीजें लाकर उन्हें खिलाते और मुट्ठी भर दाना उठा कर भूरी की तरफ कोने में फेंक देते–" ले . . . . तू भी खा। तूने कौन-सा अपराध किया है, जो मुंह दिखाते शर्म आती है ? सामने नहीं आती, तो वहीं बैठ कर खाना खा ले। लेकर बिल में न घुस जाना। . . . . कहीं ले जाकर भूरे को खिला दे। . . . . वह बहुत कुछ खाता रहता है। जो नहीं खा सकता, उसे बिल में ले जाकर जमा करता है। वह जमाखोर है, एक को खाना न मिले और दूसरा जमाखोरी करता जाए, यह तो अपराध है। अपराध ही नहीं, पाप करना हुआ।"

बच्चों के साथ-साथ भूरी को भी भरपेट खाना मिलने लगा। अब तो कमरे में उनके आने-जाने का समय भी निश्चित हो गया। वे समय पर बाबा के पास आकर खाना खाते, कुछ देर वहीं उछल-कूद करते और फिर निश्चिंत हो अपने बिल में पड़े रहते।

लगभग छह महीने के अंदर भूरी और उसके बच्चे स्वस्थ-सुंदर हो गए। तब उन्हें किसी की सहायता की जरूरत न रही। वे अपनी इच्छानुसार घूमते-फिरते, खाते-पीते और मौज-मस्ती करते। इस बीच भूरी ने उन्हें बहुत कुछ समझा दिया था। कमरे में आने वाले सभी छोटे-बड़े रास्तों से परिचित करा दिया था।

बच्चे होनहार थे। बहुत-सी बातें तो उन्होंने अपने अनुभव से जान ली थी। बाबा की संगत में रहने से उनके स्वभाव को खूब जान गए थे, वे उनकी छोटी-बड़ी बातों पर भी नजर रखने लगे। बाबा कब संध्या-भजन करने बैठते हैं, कितनी देर आंखें बंद रखते हैं, गंगा-स्नान से कितनी देर में लौट कर आएंगे– आदि बातों की पूरी जानकारी उन्हें हो गई थी।

भूरेलाल और भूरी को इस बात की खुशी थी कि उनके चारों सपूत उनसे ज्यादा चतुर और अनुभवी हो गए थे। भूरेलाल यह कभी नहीं जान सका था कि बाबा भिक्षा लेने गए हैं, तो भिक्षा में कौन-सा अनाज, कौन-सा फल और कितनी तरह की चीजें लाए हैं, जबकि बच्चों को यह मालूम करते देर नहीं लगती थी। वे बाबा की पोटली को सूंघ कर ही मालूम कर लेते कि उसके अंदर क्या माल भरा है।

बच्चे बड़े हो गए, तो उनका कमरे में आना-जाना भी कम होने लगा। ऐसी बात नहीं थी कि वे आते नहीं थे, आते जरूर थे लेकिन बाबा से छिप कर ....। बाबा को वे बिल्कुल पता न लगने देते थे। वे भूरे से भी अधिक सावधान होकर अपना काम कर जाते थे और चीजें भी पहले की तरह अपनी जगह से गायब होने लगीं।

चोरी-छिपे काम करने की यही आदत बाबा से बर्दाश्त नहीं होती थी। उनका कहना था कि जो कुछ भी करना हो, वह सबके सामने करना चाहिए। चोरी-छिपे काम करने से अपराध भावना बढ़ती है और मन में एक प्रकार का भय हमेशा के लिए बैठ जाता है।

भूरी और उसके बच्चे अब बाबा से डरने लगे थे। इसी बात से उनकी बदनीयती का पता चलने लगा। एक दिन जब वे गंगा-स्नान से लौटे, तो देखा कि भूरी उनके सिरहाने रखी हुई गांठ को जोर-जोर से बाहर खींच रही है।

बाबा को हंसी छूट गई। बोले, " तेरा भी दिमाग फिर गया है भूरी। मैं तो समझा था कि तू ठीक रास्ते पर चलेगी। लेकिन अब तक तूने बच्चों को जिस तरह साध कर रखा है, आगे भी ऐसे ही रखेगी। लेकिन यह अब तेरे बस की बात नहीं रही। जब तेरी ही नीयत खराब है, तो बच्चों को कैसे रोक सकती है। उन्हें भी तूने भूरे की तरह बना दिया है। अब वे भी अपना मुंह छिपाए फिरते हैं। कपटी हो गए हैं न। इसीलिए सामने नहीं आते।"

बाबा कहते रहे, लेकिन भूरी कहां सुनती। बाबा की परवाह किए बिना वह अपने काम में लगी रही। देख कर बाबा को क्रोध आ गया। बोले, "अब छोड़ दे उसे .... वह तेरे काम की चीज नहीं है।"

लेकिन भूरी गांठ को नहीं छोड़ा। बाबा ने एक बार फिर उसे सावधान किया, " मैं कहता हूं, छोड़ दे .... जोर-जबरदस्ती न कर।"

इस बार भी भूरी ने अनसुनी कर दी, तो बाबा ने कोने में रखी छड़ी उठा ली। फिर वे फुर्ती से आसन के पास पहुंचे और भूरी को खींच कर एक जमा दी।

भूरी वहीं चित हो गई। दो मिनट बाद ही उसे होश आया। वह उठ कर भागना चाहती थी, लेकिन उसकी पिछली टांगे जैसे बेकार हो गईं थी। उसने हिम्मत से काम लिया और किसी तरह घिसटते-घिसटते अपने छेद के पास जा पहुंची।

देखकर बाबा मन-ही-मन दुखी हो गए। बोले, "अब तू ही बता, मैं क्या कर सकता हूं? कहता रहा कि छोड़ दे, वह तेरे काम की चीज नहीं है। लेकिन तेरी जात ही ऐसी है। जो चीज काम की नहीं है, उससे भी छेड़खानी करते हो। तुम्हारी संगत में आकर मैंने अपनी जबान तक गंदी कर ली है ....। अब जा .... कुछ दिन आराम कर। जब तेरी टांगे ठीक हो जाएं, तब आना।"

UDAYSHANKAR.

तभी डिब्बे के पीछे दुबके भूरे ने सामने आकर चिक् . . . . चिक् शुरू कर दी। उसकी हरकतों से लग रहा था कि जैसे झपट पड़ेगा। साथ ही दूसरे छेदों से भूरे के बच्चे भी सिर उचका कर देख रहे थे। बाबा जिस छेद की तरफ देखते, वहीं कोई न कोई सिर उठाए दिख जाता। लगा कि जैसे भूरेलाल ने अपनी पूरी फौज वहां लगा रखी थी।

बाबा छड़ी लेकर आसन पर जा बैठे– " हरामखोरों . . . . तुम सब यहीं छिपे हो और अपनी मां को पिटवाने भेज दिया। बिलों में बैठ कर शूरवीर बनते हो। हमारा माल खाकर हमें ही धमकाते हो। पर मैं संन्यासी हूं। एक़-एक को दुरुस्त न कर दिया तो . . . .।"

भूरी अपने बिल के पास जाकर पसर गई थी। कुछ देर उनकी आपस में चिक् . . . . चिक् बनी रही। भूरेलाल को इस बात का गुस्सा था कि बाबा ने भूरी को छड़ी क्यों जमा दी। वह डिब्बों के आगे-पीछे घूम कर बाबा के प्रति अपना रोष प्रकट करता रहा। बच्चे भी इधर-उधर छलांगे लगाते रहे। कितु जब उन्हें विश्वास हो गया कि इस तरह वे बाबा का कुछ नहीं बिगाड़ सकते या उनसे बदला नहीं ले सकते, तो सब अपने-अपने बिलों में घुस गए।

भूरेलाल ने अब बदला लेने का दूसरा तरीका खोज लिया था। अगले दिन वह अपने साथियों को लेकर कमरे में घुस आया। अनेक रंगो, आकृतियों और जातियों के उसके साथी छोटे-बड़े छेदों से निकल कर कमरे में एकत्र हो गए। कई तो बेधड़क दरवाजे से ही जबरन घुसपैठ कर रहे थे। भयानक आकृति के, उदंड और बिगड़े मिजाज वाले जिन्हें किसी का भय नहीं था, कमरे में आकर उछल-कूद मचाने लगे।

बाबा भूरेलाल की शरारत समझ गए। इस बार वह पूरी ताकत के साथ बदला लेना चाहता है। देख कर छड़ी उठा ली और कमरे में घूमने लगे। छड़ी के आगे भूरेलाल की फौज कहां टिक पाती। देखते ही देखते उसके साथी बिलों की ओर भागने लगे और कुछ इधर-उधर कोनों में छिप कर अपनी जान बचाने लगे। लेकिन बाबा कब तक उनका पीछा करते। उनकी लड़ाई एक या दो दिन की नहीं थी, बल्कि वे जो हफ्तों-महीनों की योजना बना कर चल रहे थे। कई दिन चलने वाले इस शीत युद्ध ने बाबा को दुखी कर दिया। वे भूरेलाल को कोसने लगे– " हरामी ने सबको भड़का दिया है। इतने बड़े जंगल में फैली हुई अपनी पूरी बिरादरी को मेरे विरुद्ध खड़ा कर दिया है। लेकिन कोई बात नहीं। ये सब मिल कर भी मेरा क्या बिगाड़ लेंगे। नहीं जानते कि हम बाबा लोग हैं, हमारा क्या है। अभी उठ कर चल देंगे, तो दुबारा लौट कर आने वाले नहीं हैं।"

भूरेलाल पर क्रोध आने लगा। लेकिन क्रोध करने से होता भी क्या। वह हाथ आने वाला नहीं था। बाबा ने भी निश्चय कर लिया कि अब कभी भूरेलाल उनके काबू में आ गया, तो जिंदा नहीं छोड़ेंगे। वह दया का पात्र नहीं है। दुष्टों पर दया करने से कोई लाभ नहीं है।

समय बीतता गया। भूरेलाल की शरारतें दिनों-दिन बढ़ती गईं। अपनी साधना में अनेक प्रकार की बाधाएं उपस्थित होते देख बाबा ने वहां से चले जाने का निश्चय कर लिया। वे अपने लिए नई जगह की तलाश करने लगे।

UDAYSHANKAR.

एक दिन जंगल में घूमते हुए उन्होंने देखा कि भूरेलाल एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ कुछ खा रहा था। वह क्या खा रहा था, यही देखने के लिए छिप कर बैठ गए।

भूरेलाल कुछ देर मुंह चलाता रहा। किंतु जब उसका भोजन समाप्त हो जाता, तब वह पेड़ की जड़ में फिर से जा पहुंचता और पंजों से खुदाई शुरू कर देता। जमीन को जगह-जगह खोद कर भूरेलाल ने पेड़ की जड़ को खोखला कर दिया था। लगता था पेड़ किसी भी समय गिर सकता है।

देखते-देखते एक बड़ा-सा छेद बना कर भूरेलाल उसके अंदर घुसा और कोई चीज निकाल लाया। शायद कंद-मूल था। अदरक जैसी गांठ को बाहर निकाल भूरेलाल ने पंजों से उसकी मिट्टी झाड़ दी और एक पत्थर की ओट में रख आया। इसके बाद फिर नए सिरे से खुदाई शुरू करने लगा।

बाबा समझ न सके कि भूरेलाल चाहता क्या था। वहां कोई चीज दबी हुई है या कोई दूसरा कारण है। उन्हें लगा कि जो भी हो, भूरेलाल अपनी धुन का पक्का है। वह अगले पंजों से मिट्टी खोदने में जुटा था और पिछले पंजों से साथ-साथ उसे पीछे ढकेलता जा रहा था। कितनी मेहनत और लगन से वह अपना काम कर रहा था। मिट्टी के अंदर जमे हुए पत्थरों को भी उसने उखाड़ कर बाहर फेंक दिया था। बाबा मन-ही-मन आश्चर्य करने लगे– " वाह रे भूरेलाल ! तू बड़ा मेहनती है। लेकिन दुष्ट भी कम नहीं है। तेरे कारण ही मुझे यहां से जाना पड़ रहा है। लेकिन याद रखना, एक दिन तुझे भी ऐसे ही छोड़ कर जाना पड़ेगा। कोई ऐसा गुरू टकरेगा, जो तेरा यहां रहना मुश्किल कर देगा।"

बाबा उठ कर जाने लगे तो अचानक उनकी नजर एक काले सांप पर पड़ी। सांप जाने कब से पत्तों के बीच छिप कर बैठा भूरेलाल को देख रहा था। बाबा समझ गए कि वह भूरेलाल पर ही दांव लगाए बैठा था। मौका पाते ही भूरेलाल को पकड़ लेगा। अब भूरेलाल बच नहीं सकता। उस्ताद को उस्ताद टकर गया था। बस, कुछ ही क्षणों की बात है कि भूरेलाल समूचा उसके पेट में होगा। न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी। वह न रहेगा, तो सारे संकट दूर हो जाएंगे।

बाबा सांस रोक कर उस दृश्य को देखने लगे। छेद में गहरे पड़ जाने के कारण भूरेलाल अपने चारों तरफ देख नहीं सकता था। सांप के लिए यही मौका था। वह झाड़ी से निकल कर पत्थर की ओट में हो लिया और भूरेलाल की नजरों से अपने को बचाता हुआ उसकी ओर बढ़ने लगा।

अपने शिकार पर झपटते हुए सांप भी कितना शांत दिखाई दे रहा था। वह अपने शरीर को धीरे-धीरे सरकाता हुआ आगे बढ़ रहा था। देख कर बाबा का मन अशांत हो उठा। अब क्या होगा। भूरेलाल का अंतिम समय निकट आ चुका था। कुछ ही क्षणों की बात और थी, उसके बाद भूरेलाल इस संसार में नहीं होगा।

UDAYSHANKAR.

झपटने की तैयारी में सांप ने अपने पिछले हिस्से को समेट लिया। वह बार-बार अपने मुंह को खोल और बंद कर रहा था, ताकि भूरेलाल को मौके पर ठीक से दबोच ले।

बाबा के मन में दया उमड़ आई। भूरेलाल दुष्ट सही, लेकिन साहसी था। वह न रहेगा, तो सब सूना-सूना हो जाएगा। यह सोच कर बाबा ने जोर से ताली बजा कर भूरे को सावधान कर दिया।

भूरे ने पलट कर देखा कि सामने मौत खड़ी है। तो वह कूद कर पत्थर पर आ पहुंचा। ज्यों ही सांप ने फन उठा कर लपकना चाहा, त्यों ही भूरेलाल ने दूसरी कूद लगाई और घनी झाड़ी में घुस गया।

शिकार के छूट जाने पर सांप फुंफकारता हुआ तेजी से झाड़ी में घुसा, किंतु भूरेलाल उसकी आंखों में धूल झोंक कर वहीं-कहीं चंपत हो गया था।

छोटे-बड़े छेदों में घुस कर सांप ने उसे ढूंढना चाहा, सूखे पत्तों को अपनी पूंछ से उलट-पलट कर डाला। लेकिन भूरेलाल कहां मिलता। अंत में वह भी निराश होकर चट्टान की एक दरार में उतर गया।

उस दिन भूरेलाल बाल-बाल बच गया। बाबा ने उसे बचा लिया। लेकिन वह इतना कृतज्ञ नहीं था कि बाबा के उपकारों को समझ पाता। बाबा को परेशान करने का उसका कार्यक्रम पहले की तरह ही चलता रहा।

UDAYSHANKAR.

बाबा ने एक दिन तड़के उठकर देखा कि चीनी का डिब्बा आधा खुला हुआ था। भूरेलाल डिब्बे के अंदर बैठ कर मजे से चीनी खा रहा था। डिब्बे के बाहर लटकती हुई उसकी लंबी पूंछ को देख कर बाबा को निश्चय हो गया कि वह भूरेलाल ही है। वे दबे पांव डिब्बे के पास पहुंचे और फुर्ती से डिब्बे का ढक्कन बंद कर दिया। भूरेलाल को अपनी पूंछ संभालने का भी मौका न मिला और वह डिब्बे के बाहर लटकती रह गई।

उस दिन भूरेलाल पकड़ में आ गया। बाबा पूरे जोर से ढक्कन को दबाए रहे। उन्हें मालूम था कि थोड़ी भी ढील दी गई, तो भूरेलाल उछल कर बाहर आ सकता था। वह बड़ा चतुर था।

उसे डिब्बे में बंद पड़ा देख बाबा को मन-ही-मन संतोष हो रहा था। आज काबू आया है। सारी दादागिरी निकल जाएगी। भूरेलाल डिब्बे के अंदर जोर-जोर से उछलने लगा। इस तरह कई झटके लगने के कारण डिब्बे के बारह लटकती उसकी पूंछ कट गई।

बाबा यह देख कर बोले, " तेरी यही सजा ठीक है भूरेलाल। अपनी पूंछ पर तुझे बड़ा था। इससे तू कई तरह के काम लेता रहा है। अब यह भी नहीं रही। इसके न रहने से तेरा रंग-रूप भी बिगड़ गया होगा। इतनी सजा तेरे लिए काफी है। लेकिन अभी तुझे छोड़ूंगा नहीं।" कहते हुए बाबा ने डिब्बे को जमीन पर रखा और एक बड़े पत्थर से ढक्कन को दबा दिया।

थोड़ी देर बाद ख्याल आया कि डिब्बे के अंदर हवा के आने-जाने का रास्ता नहीं है। कहीं अंदर पड़े-पड़े भूरेलाल का दम न घुट जाए, सोच कर वे डिब्बे के पास पहुंचे। देखा, भूरेलाल की उछल-कूद बद हो चुकी थी। कहा मर न गया हो। बाबा पत्थर हटा कर धीरे-से ढक्कन को खिसका कर देखना चाहते थे कि भूरेलाल ने ढक्कन को पूरे जोर के साथ टक्कर लगाई। ढक्कन दूर जा गिरा और भूरेलाल उछलकर जमीन पर आ गया और देखते-देखते नौ-दो-ग्यारह हो गया। बाबा क्या करते।

भूरेलाल इतनी फुर्ती से निकल जाएगा, बाबा सोच भी नहीं सकते थे। बोले, " कोई बात नहीं भूरेलाल। मैंने तुझे छोड़ दिया है, वरना डिब्बे के अंदर पड़ा-पड़ा सड़ जाता। तेरी पूंछ तो रही नहीं तू भी क्या याद रखेगा कि बाबा से पाला पड़ा था।"

इसके बाद कई दिनों तक भूरेलाल दिखाई नहीं दिया। शायद अपनी पूंछ न रहने के कारण उसने इधर-उधर घूमना बंद कर दिया था। लेकिन भूरी और उसके बच्चे रोज वहां आ जाते थे। उनके साथ जंगल में फैली हुई उनकी बिरादरी भी होती, जिन्हें भूरे ने यहां आने का रास्ता दिखाया था। बाबा इन सबके कारण दुखी रहने लगे।

कुछ समय बाद बाबा का एक शिष्य आश्रम में आया और वहीं गुरूजी के पास ठहर गया। उन दिनों भूरी और उसके दूसरे साथियों ने आश्रम में बहुत उत्पात मचा रखा था। गुरूजी की साधना में बाधा उपस्थित होते देख, शिष्य को बहुत चिंता हुई। दुखी होकर गुरूजी ने भी उसे भूरेलाल की कहानी सुना दी। बोले, "अब यहां से कहीं दूर चले जाने में ही शांति मिल सकती है। यहां हम शांति से नहीं रह सकते।"

शिष्य को लगा कि गुरूजी ठीक कह रहे हैं। क्योंकि पहली रात को ही जब शिष्य अपने आसन पर सोने लगा, तभी भूरेलाल की फौज वहां आ पहुंची और उसके ऊपर उछल-कूद शुरू कर दी। कोई उसके सिरहाने रखी चीजों को टटोलने लगा, तो कोई खूंटी पर टंगे हुए उसके झोले की तलाशी लेने जा पहुंचा।

भूरेलाल की इतनी बड़ी फौज के सामने वह अकेला क्या करता। रात भर जाग कर वह उनसे अपने सामान की रक्षा करता रहा। सुबह हुई, तो उसने गुरूजी से निवेदन किया— "यदि आपकी आज्ञा हो, तो मैं भूरेलाल की सारी फौज का एक बार में ही सफाया कर दूं। एक-एक को पकड़ कर गंगा मैया की शरण में न पहुंचाया, तो मेरा नाम भी आत्मानंद नहीं।"

गुरूजी ने आत्मानंद की तरफ देखा। सोचने लगे, यह कैसे हो सकता है। इतनी बड़ी फौज को पकड़ पाना संभव नहीं था। फिर सोचा, जब आत्मानंद पूरे विश्वास के साथ यह दावा कर रहा है, तो उसके पास कोई युक्ति जरूर होगी। बोले, "ठीक है, तुम इन्हें पकड़ सकते हो, तो पकड़ डालो। लेकिन गंगा-प्रवाह नहीं करना। गंगा में बहा कर इन निरीह प्राणियों की हत्या करना ठीक नहीं है। इन्हें गंगा के उस पार छोड़ आना ठीक रहेगा, ताकि वे इस तरफ दुबारा न आ सकें।"

गुरूजी ने आज्ञा दे दी, तो आत्मानंद ने उन्हें पकड़ने की तरकीब ढूंढ निकाली। अगले ही दिन उसने भांग की तेज पत्तियों को आटे के साथ भून लिया। फिर उसमें गुड़ मिला कर लड्डू बना लिए। रात को सोने के पहले आत्मानंद ने कमरे में जगह-जगह भांग के लड्डू रख दिए और सो गया।

उस रात भूरेलाल की फौज को कुछ पता न चला। वे सब कुछ भूल कर लड्डूओं पर टूट पड़े और सारी रात लड्डू खाते रहे।

सुबह हुई। बाबा ने उठ कर देखा कि भूरेलाल की फौज वहीं दीवार की आड़ लेकर पड़ी हुई थी। उन्हें अपने बिलों में जाने का भी होश नहीं था। सबकी आंखें मुंद रही थीं और कान भी जैसे बंद हो गए थे।

कोनों में जगह-जगह एक को दूसरे के ऊपर लुढ़का हुआ देख कर बाबा को हंसी आ गई। वहीं पास में एक जगह भूरेलाल भी टांगें आसमान की तरफ किए लेटा पड़ा था, जैसे मर गया हो।

बाबा उठ कर उसके पास पहुंचे और आवाज दी, "अब उठ जा भूरेलाल ! आज तो तू घोड़े बेच कर सो रहा है। लेकिन यह सोने का वक्त नहीं है। उठ .... और अपना रास्ता ले ....।"

लेकिन भूरेलाल कहां सुनता। रात में एक पूरा लड्डू निगल जाने के कारण वह मस्ती में डूबा पड़ा था। बाबा ने चिमटे से उसे हिलाया, तो भूरेलाल ने उठ कर चलने की कोशिश की। लेकिन दो कदम ही चलने के बाद उसके पांव लड़खड़ा गए और फिर वहीं लेट गया।

अब बाबा ने उसके साथियों की खबर ली। वे भी इस हालत में नहीं थे कि कूद कर अपने छेदों में घुस पाते। बाबा ने एक बार जोर से तालियां बजा कर उन्हें सावधान किया। जिन्हें थोड़ा-बहुत होश था, उन्होंने इस आवाज को सुन कर भागने की कोशिश की, लेकिन मालूम न कर सके कि किस तरफ भागा जाए। जैसे उन्हें कुछ भी दिखाई न दे रहा हो। वे अपने अगले पंजों को उठा कर दीवारों को टटोलने लगे। उठते-गिरते और फिर दीवार का सहारा लेकर आगे-पीछे सरकने लगते।

बाबा काफी देर तक चिमटा बजा कर उन्हें भगाते रहे। लेकिन भागने की चिंता उन्हें कहां थी। वे दीवारों को पकड़ कर इधर-उधर नाचते रहे। जैसे मदारी बंदरों को नचाता है, उसी तरह बाबा उन्हें देर तक नचाते रहे।

कुछ देर तक गुरू और शिष्य मिल कर उनका तमाशा देखते रहे। दोनों भूरेलाल और उसके बहादुर सिपाहियों की हंसी उड़ाते रहे। अंत में बाबा ने आत्मानंद से कहा कि भूरेलाल सहित उसकी पूरी फौज को गंगा के उस पार छोड़ आए।

आत्मानंद ने उन्हें उठा कर एक जाली में भर लिया और होश आने के पहले गंगा के उस पार पहुंचा दिया।

इसके पश्चात गुरू-शिष्य, दोनों शांतिपूर्वक आश्रम में रहने लगे। पर यह शांति ज्यादा देर तक बनी न रह सकी। अचानक एक दिन बाबा को कुटिया में भूरेलाल जैसा एक चेहरा नजर आया और गुरू-शिष्य दोनों उसे ठगे-से देखते रह गए। ....

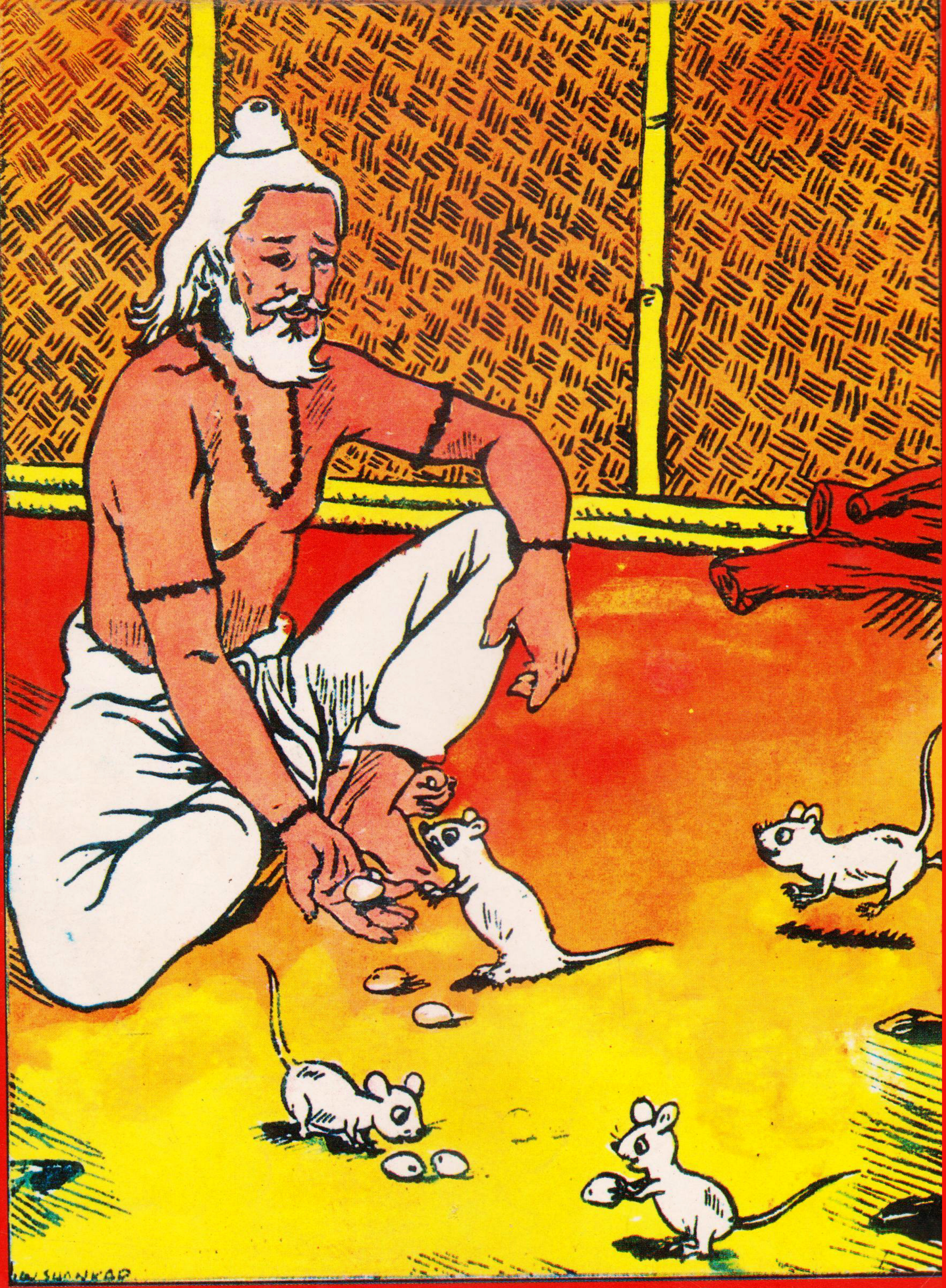

मूल्य : 26 रुपये

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

ISBN - 81-230-0288-2